Q- मीमांसा दर्शन के अपूर्व का वर्णन करें?

Ans मीमांसा दर्शन हिन्दुओं के छः दर्शनों में से है। भारतीय दर्शन की आस्तिक परम्परा में मीमांसा का स्थान सबसे ऊपर माना गया है। अतः मीमांसा सबसे बड़ा आस्तिक दर्शन है, क्योंकि ये दर्शन वैदिक वाक्यों को पूर्णतः प्रमाण माना है। वेद के दो भाग है - कर्म काण्ड और ज्ञान काण्ड। इस शास्त्र को पूर्व मीमांसा और वेदान्त को उत्तर-मीमांसा भी कहा जाता है। पूर्व मीमांसा में धर्म विचार और उत्तरमीमांसा में ब्रह्म का विचार है। मीमांसा दर्शन के प्रणेता आचार्य जैमिनी हैं। जैमिनी मुनि द्वारा रचित सूत्र होने से मीमांसा को जैमिनीय धर्म मीमांसा कहा जाता है।

अपूर्व का सिद्धांत:- पक्ष-प्रतिपक्ष को लेकर वेदवाक्यों के निर्णीत अर्थ के विचार का नाम मीमांसा है। अपूर्व का सिद्धांत धर्म सिद्धांत से जुड़ा है। यह सिद्धांत मीमांसकों का बहुत महत्वपूर्ण सिद्धांत है, और इसका वर्णन केवल मीमांसा में ही पाया जाता है। इनका मत है की प्रत्येक किए गए कर्म का फल जरूर मिलता है। अपूर्व वह है जो पहले नहीं था। इस लोक में किए गये कर्म एक अदृष्ट शक्ति को जन्म देती है वही अपूर्व है। इस के आधार पर आत्मा परलोक में जाकर सुख या दुःख भोगती है। क्योंकि अपूर्व कर्मफल का निर्णायक है। कोई व्यक्ति वर्तमान काल में यज्ञ करता है और भविष्य काल में उसे स्वर्ग की

Scanned with CamScanner

प्राप्ती होगी। कर्म फल और स्वर्ग प्राप्ती के बीच में जो विरोध्य उत्पन्न होता है, उसे मीमांसक अपूर्व मानते हैं। कर्म और कर्म फल के बीच अपूर्व ही माध्यम है। यह यज्ञादि कर्म इस लोक में करेंगे जिससे अपूर्व नामक अदृश्य शक्ति का उदय होगा, पुनः वही शक्ति हमें स्वर्गादि फल देगी।

अपूर्व सिद्धांत को चलने के लिए किसी ईश्वर या सत्ता की जरूरत नहीं है। यह स्वचालित व्यवस्था है।

Fauzia Perween
H.O.D (Philosophy)

Scanned with CamScanner